श्री धर्मस्थल मंजुनाथेश्वर स्कूल, मंगलुरु

दसवी कक्षा **कार्य पत्रक - 1**

दिनांक : 30-8-25 **अपठित गद्यांश**

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है । जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनंद नहीं उठाता, जो उसके पास मौजूद हैं, बल्कि उन वस्तुओं से दुख उठता है, जो दूसरों के पास है । वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है और इस तुलना में अपने पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं । दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है । मगर, ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या ? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भगनी पड़ती है । एक उपवन को पाकर भगवान को धन्यवाद देते हुए उसका आनंद नहीं लेना और बराबर इस चिंता में निमग्न रहना कि इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला, एक ऐसा दोष है, जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र भी भयंकर हो उठता है । अपने अभाव के प्रति दिन-रात सोचते-सोचते वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोड़कर वह दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्तव्य समझने लगता है । ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निन्दा है । जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही बुरे किस्म का निंदक भी होता है। दूसरों की निंदा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों को आँखों से गिर जाएँगे और जो स्थान रिक्त होगा, उस पर मैं अनायास ही बैठा दिया जाऊँगा । मगर ऐसा न आज तक हुआ है और न होगा । दूसरों को गिराने की कोशिश करते हुए अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं की जा सकती । एक बात और है कि संसार में कोई भी मनुष्य निंदा से नहीं गिरता । उसके पतन का कारण सद्गुणों का ह्रास होता है । इसी प्रकार कोई भी मनुष्य दूसरों की निंदा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता । उन्नति तो उसकी तभी होगी, जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाए तथा अपने गुणों का विकास करे ।

1.दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए -

क) मनुष्य के पतन का कारण उसके सद्गुणों का ह्रास होता है ।

ख) दूसरों की निंदा करके स्वयं की कभी भी उन्नति नहीं की जा सकती ।

ग) (क) और (ख) दोनों घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

2. गद्यांश के अनुसार मनुष्य की उन्नति तब होगी जब - - - - - - - - - ।

क) मनुष्य निंदा को छोड़ दे ख) मनुष्य अपने चरित्र को स्वच्छ एवं साफ़ बनाए

ग) मनुष्य सद्गुणों का विकास करें घ) उपर्युक्त सभी

3. ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निंदा है । कथन के अनुसार सही विकल्प का चयन कीजिए ।

i) ईर्ष्यालु और निंदक के मध्य घनिष्ठ संबंध होता है ।

ii) जो व्यक्ति जितनी अधिक ईर्ष्या करता है, वह उसकी उतनी ही अधिक निंदा भी करता है ।

iii) निंदक वही होता है, जो ईर्ष्यालु स्वभाव का होता है ।

क) केवल (i) सही है ख) केवल (ii) सही है

ख) (ii) और (iii) दोनों सही है घ) (i), (ii) और (iii) सही है ।

4. अनोखा वरदान क्या है तथा मनुष्य के हृदय में कौन घर बना लेती है ?

5. ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र भयंकर क्यों हो उठता है ?

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

पाठक आमतौर पर रूढ़िवादी होते हैं, वे सामान्यतः साहित्य में अपनी मर्यादाओं की स्वीकृति या एक स्वप्न जगत में पलायन चाहते हैं । साहित्य एक झटके में उन्हें अपने आस-पास के उस जीवन के प्रति सचेत करता है, जिससे उन्होंने आँखें मूँद रखी थीं । शुतुरमुर्ग अफ्रीका के रेगिस्तानों में ही नहीं मिलते, वे हर जगह बहुतायत में उपलब्ध है । प्रौद्योगिकी के इस दौर का नतीजा जीवन के हर गोशे में नक़द फसल के लिए बढ़ता हुआ पागलपन है और हमारे राजनीतिज्ञ, सत्ता के दलाली, व्यापारी, नौकरशाह - सभी लोगों का इस भगदड़ में नहीं पहुंचना, जैसा दूसरे कराटे हैं वैसा करने, चूहदौड़ में शामिल होने और कुछ-न-कुछ हासिल कर लेने को जिए जा रहे हैं । हम थककर सांस लेना और अपने चारों ओर निहारना, हवा के पेड़ में से गुजरते वैट पत्तियों की मनहर लय-गतियों को और फूलों के जादुई रंगों को, फूली सरसों के चमकदार पीलेपन को, लिखे मैदानों की घनी हरीतिमा को मर्मर ध्वनि के सौन्दर्य, हिमाच्छादित शिखरों की भव्यता, समुद्र तट पर पछाड़ खाकर बिखरती हुई लहरों के घोष को देखना-सुनना भूल गए हैं । कुछ लोग सोचते हैं कि पश्चिम का आधुनिकतावाद और भारत तथा अधिकांश तीसरी दुनिया के नव-औपनिवेशिक चिंतन के साथ अपनी जड़ों से अलगाव, व्यक्तिवादी अजनबियत में हमारा अनिवार्य बेलगाम धँसाव, अचेतन के बिंब बौद्धिकता से विद्रोह, यह घोषणा कि दिमाग़ अपनी रस्सी के अंतिम सिरे पर है, यथार्थवाद का विध्वंस, काम का ऐण्ड्रिक सुख मात्र रह जाना और मानवीय भावनाओं का व्यवसायीकरण तथा निम्नस्तरीयकरण इस अंधी घाटी में आ फ़सने की वजह है । लेकिन वे भूल जाते हैं कि आधुनिकरण इतिहास की एक सच्चाई है, जो नई समस्याओं को जन्म देने और विज्ञान को अधिक जटिल बनाने के बावजूद, एक तरह से, मानव जाति की नियति है । मेरा सुझाव है कि विवेकहीन आधुनिकता के बावजूद आधुनिकता की दिशा में धैर्यपूर्वक सुयोजित प्रयास होने चाहिए । एक आलोचक किसी नाली में भी झाँक सकता है, पर वह नाली-निरीक्षक नहीं होता । लेखक का कार्य दुनिया को बदलना नहीं, समझना है, साहित्य क्रांति नहीं करता, वह मनुष्यों का दिमाग़ बदलता है और उन्हें क्रांति की आवश्यकता के प्रति जागरूक बनाता है ।

1.पाठक साहित्य से सामान्यतौर पर क्या अपेक्षा रखते हैं ?

क) साहित्य को हमारे मन की बात कहानी चाहिए

ख) साहित्य को संसार को यथावत समझना चाहिए

ग) साहित्य तनाव कम करने वाला होना चाहिए

घ) साहित्य को जीवन कौशल मूल्यों की शिक्षा देनी चाहिए

2. लेखक के अनुसार गद्यांश पढ़कर बताइए कि लेखक का कार्य क्या है ?

i) लेखक का कार्य दुनिया को बदलना है ii) लेखक का कार्य दुनिया को समझना है

iii) लेखक का कार्य मनुष्यों का दिमाग़ बदलना है

iv) लेखक लोगों को क्रांति की आवश्यकता के प्रति जागरूक करता है ।

क) केवल कथन (i) सही है ख) कथन (i), (ii) और (iii) सही है

ग)कथन (ii), (iii) और (iv) सही है घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

3. कथन पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए

क) आजकल लोगों का नकद फसल के प्रति पागलपन बढ़ता ही जा रहा है

ख) लोग तुरंत व अधिक से अधिक लाभ कमाना चाहते हैं

ग) (क) और (ख) दोनों घ) मानवीय भावनाओं का व्यवसायीकरण आधुनिकरण की देन है

4. सपनों की दुनिया से रहने वाले पाठक को लेखक ने क्या कहा ?

5. आधुनिकता की दिशा में सुयोजित प्रयास क्यों होने चाहिए ? स्पष्ट कीजिए ।